प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23
Sample Paper - 4
विषय हिंदी (आधार)
(विषय कोड -302)
कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[10]**

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्रवितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो-माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेनेवाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्रायः अभावे दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को

परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

(i) विद्या हमें किस पथ पर अग्रसर करती है?

i. सत्पथ पर
ii. हिंसा पथ पर
iii. समाज की ओर
iv. राष्ट्र की ओर

(ii) **परावलम्बी** शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-

i. परा
ii. पर
iii. लम्बी
iv. पराव

(iii) आधुनिक शिक्षित युवक का अधिकांश समय कैसे व्यतीत होता है?

i. नौकरी की तलाश में
ii. पढ़ाई करते हुए
iii. शिक्षा अर्जन हुए
iv. जीविका निर्वाह करते हुए

(iv) गद्यांश के लिए उचित शीर्षक होगा-

i. शिक्षा के सोपान
ii. शिक्षा का आधार
iii. शिक्षा के नियम
iv. शिक्षा का प्रचार

(v) मनुष्य मानव जीवन का अभिधान कब नहीं पा सकता?

i. जब वह विद्यावान होता है
ii. जब वह विद्याहीन होता है
iii. जब वह जीवन यापन करता है
iv. जब वह जीविका निर्वाह करता है

(vi) बिना कमाए क्या संभव नहीं है?

i. जीवन निर्वाह
ii. विद्या अर्जन

iii. विद्याहीन

iv. सार्थक

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

I. कमाए बिना जीवन का निर्वाह किया जा सकता है।

II. विद्या हमें भारवाहक बना देती है।

III. वर्तमान शिक्षा हमारे दृष्टिकोण को विकसित नहीं करती है।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

i. I और II

ii. II और III

iii. केवल I

iv. इनमें से कोई नहीं

(viii) आधुनिक शिक्षा पद्धति की विशेषता है-

i. जीविकोपार्जन करना

ii. धनार्जन करना

iii. स्वतंत्र रहना

iv. भावनाओं को चेतन करना

(ix) विद्याहीन व्यक्ति का जीवन कैसा होता है?

i. परावलम्बी

ii. स्वाबलम्बी

iii. आत्मनिर्भर

iv. स्वनिर्भर

(x) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): वर्तमान भारत में विद्या जीना नहीं सिखाती है।

कारण (R): विद्या दो प्रकार की होती है।

i. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ii. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

iii. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

iv. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[5]**

(i) भारत में पहला छापाखाना कब लगा?

क) सन् 1546 में   ख) सन् 1656 में

ग) सन् 1576 में　　　　घ) सन् 1556 में

(ii) निम्न में कौन सा अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है?

क) प्रभासाक्षी　　　　ख) भास्कर

ग) वेबदुनिया　　　　घ) हिंदुस्तान

(iii) जनसंचार के कौन-कौन से लोकप्रिय माध्यम वर्तमान में प्रचलित हैं?

क) टेलीविजन एवं इंटरनेट　　　　ख) अन्य

ग) रेडियो और अखबार　　　　घ) टेलीविजन और अखबार

(iv) एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उसका मनोरंजन करना होता है। उसे कहते है-

क) आलेख लेखन　　　　ख) फ़ीचर लेखन

ग) समाचार लेखन　　　　घ) इनमें से कोई नहीं

(v) बीट रिपोर्टिंग पत्रकारिता की ________ अवस्था है।

क) अंतिम　　　　ख) परिष्कृत

ग) मध्यम　　　　घ) आरंभिक

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

अरे! चाटते जूठे पत्ते जिस दिन देखा मैंने नर को
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाभर को?
यह भी सोचा, क्यों न टेटुआ घोटा जाए स्वयं जगपति का?
जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का।
जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी?
छोड़ आसरा अलखशक्ति का रे नर स्वयं जगपति तू है,
यदि तू जूठे पत्ते चाटे, तो तुझ पर लानत है थू है।
ओ भिखमंगे अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिर दोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग और निद्रा संमोहित,
प्राणों को तड़पाने वाली हुँकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे।
भूखा देख तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जग-जन के
तू तो कह दे, नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे,
तेरी भूख असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल,
तो फिर समयूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर निर्बल।

(i) कवि क्या देखकर दुनियाभर में आग लगा देना चाहता है?

क) भूखे लोगों को खाना खाते देखकर।
ख) भूखे लोगों को देखकर।
ग) भूखे लोगों को जूठे पत्तलों में खाना खोजते देखने पर।
घ) लोगों को सोता हुआ देखकर।

(ii) **वह तो हुआ राख की ढेरी** कवि ऐसा क्यों कह रहा है?

क) क्योंकि जगपति सो गया है।
ख) क्योंकि जग में समानता नहीं आई।
ग) क्योंकि अनाचार फैला हुआ है।
घ) क्योंकि जगपति राख का ढेर हो गया है।

(iii) **अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे** पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अनुप्रास अलंकार
ख) यमक अलंकार
ग) उपमा अलंकार
घ) श्लेष अलंकार

(iv) कवि किसको उनकी शक्ति का भान कराना चाहता है?

क) लोगों को
ख) संसार को
ग) स्वयं को
घ) भूखों को

(v) कवि ने दुनिया को क्या कहा है?

क) कायर व साहसी
ख) कायर व निडर
ग) कायर व निर्बल
घ) साहसी व निर्बल

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

टकराएगा नहीं आज उद्धत लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे पार तक पहुँचाएगा?
अब तक धरती अचल रही पैरों के नीचे,
फूलों की दे ओट सुरभि के घेरे खींचे,
पर पहुँचेगा पथी दूसरे तट पर उस दिन,
जब चरणों के नीचे सागर लहराएगा।
गर्त शिखर बन, उठे लिए भंवरों का मेला,
हुए पिघल ज्योतिष्क तिमिर की निश्छल बेला,
तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।
धूल पोंछ काँटे मत गिन छाले मत सहला,
मत ठंडे संकल्प आंसुओं से तू बहला,
तुझसे हो यदि अग्नि-स्नात यह प्रलय महोत्सव,

तभी मरण का स्वस्ति-गान जीवन गाएगा।
टकराएगा नहीं आज उन्मद लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे दिवस तक पहुँचाएगा?

(i) दिए काव्यांश का क्या उद्देश्य प्रतीत होता है?

क) जागृति व उत्साहित करने हेतु प्रेरणा।
ख) जीवन दर्शन के विषय में प्रोत्साहन।
ग) आत्मविश्वास जगाने हेतु दृष्टांत प्रस्तुति।
घ) हर हाल में कार्य करने की प्रेरणा।

(ii) तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता-पंक्ति का भाव है-

i. मोतियों के समान आंसुओं को स्वप्न में आने वाले सुंदर द्वीपों पर नष्ट नहीं करना चाहिए।
ii. मोती के द्वीप खोजने के लिए सागर में दूर-दूर जाकर कष्टदायी विचरण करना होगा।
iii. जीवन संसाधनों के लिए यथार्थ में रहकर प्रयत्न करना होगा।
iv. यदि ऐसा होगा तो जीवन शिला-सा जम जाएगा।

क) विकल्प (iv)
ख) विकल्प (ii)
ग) विकल्प (i)
घ) विकल्प (iii)

(iii) तुझसे हो यदि अग्नि स्नात-पंक्ति का अर्थ है-

i. यदि तुम जीवन की कष्टतम परिस्थिति झेल लोगे तो जीवन तुम्हारे बलिदान की प्रशंसा करेगा।
ii. यदि तुम आग के दरिया में डूबकर जाने को तैयार हो तो जीवन-मरण के बंधन से मुक्त हो सकोगे।
iii. जीवन प्रलय के महोत्सव में आग लगाने वाला ही सफलतम वीर कहलाएगा।
iv. यदि तुम जीवन में बलिदान करोगे तो जग सदा तुम्हारे जीवन की सराहना करेगा।

क) विकल्प (iv)
ख) विकल्प (i)
ग) विकल्प (ii)
घ) विकल्प (iii)

(iv) समय को गतिशील करने के लिए क्या आवश्यक है?

i. समय का सदुपयोग कर मानव कल्याण में लगे रहना।
ii. तुच्छ कार्यों में संलग्न न रहकर समय नष्ट होने से बचाना।
iii. अपने हाल की परवाह न करते हुए सकारात्मक भाव से कार्य करते रहना।
iv. 'टाल-मटोल-समय का चोर' कथनानुसार स्वस्ति (शुभ) कार्य करने में टाल-मटोल न करना।

क) विकल्प (iii)
ख) विकल्प (i)
ग) विकल्प (iv)
घ) विकल्प (ii)

(v) काव्यांश के अनुसार, **फूलों की ओट व सुरभि के घेरे** -व्यक्ति के जीवन में क्या कार्य कर सकते हैं?

i. वे व्यक्ति के जीवन को अपनी सुगंध से शांत व एकाग्र कर सकते हैं।
ii. वे अपने औषद्यीय गुणों से व्यक्ति का जीवन व्याधिमुक्त कर सकते हैं।
iii. वे उसे लक्क्य प्राप्ति के मार्ग से विचलित कर सकते हैं।
iv. फूल उर्वरता व समृद्धि का प्रतीक हैं। वे जीवन में ईश्वर के प्रति निकटता लाने में सहायक हो सकते हैं।

क) विकल्प (iii) ख) विकल्प (ii)

ग) विकल्प (i) घ) विकल्प (iv)

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

अर्ध राति गइ कपि नहिं आयऊ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनी मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।
सुत बि नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जिएँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोहि। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।

(i) राम लक्ष्मण के किस स्वभाव का स्मरण करते हैं?

क) सेवा-भाव का ख) प्रेममयी हृदय का

ग) भ्रात प्रेम का घ) कोमलता का

(ii) राम के अनुसार लक्ष्मण ने उनके हित के लिए क्या-क्या सहन किया?

क) जंगल में भूख, प्यास, कमजोरी ख) जंगल में काँटे, जंगली-जानवर, कीट-पतंगे

ग) जंगल में जाड़ा, ताप, आँधी-तूफान घ) जंगल में सीता-हरण, युद्ध, शक्ति

(iii) काव्यांश में किस क्षति को राम ने बड़ी क्षति माना है?

क) तात का न आना ख) भ्राता को खो देना

ग) भार्या को खो देना घ) कपि का न आना

(iv) लक्ष्मण की अनुपस्थिति में राम को अपना जीवन कैसा प्रतीत होता है?

क) निरर्थक ख) अपमानित

ग) कठोर

घ) लाच्चर

(v) राम यदि जानते कि वनागमन के क्या परिणाम होंगे, तब वे क्या नहीं करते?

क) लक्ष्मण को वन में साथ न लाते

ख) रावण से युद्ध न करते

ग) माँ के वचन का पालन न करते

घ) पिता के वचन का पालन न करते

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

उछलते-कूदते, एक-दूसरे को धकियाते ये लोग गली में किसी दुमहले मकान के सामने रुक जाते, "पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।" और जिन घरों में आखिर जेठ या शुरू आषाढ़ के उन सूखे दिनों में पानी की कमी भी होती थी, जिन घरों के कुएँ भी सूखे होते थे, उन घरों से भी सहेजकर रखे हुए पानी में से बाल्टी या घड़े भर-भर कर इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते थे, पानी फेंकने से पैदा हुए कीचड़ में लथपथ हो जाते थे। हाथ, पाँव, बदन, मुँह, पेट सब पर गंदा कीचड़ मलकर फिर हाँक लगाते हैं "बोल गंगा मैया की जय" और फिर मंडली बाँधकर उछलते-कूदते अगले घर की ओर चल पड़ते बादलों को टेरते, "काले मेघा पानी दे।" (धर्मवीर भारती)

(i) किसी दुमहले मकान के सामने कौन रुक जाते थे?

क) प्यासे लोग

ख) जल से भीगे लोग

ग) मुसाफ़िर

घ) इंदर सेना

(ii) किन-किन महीनों में पानी माँगा जाता था?

क) माघ-ज्येष्ठ

ख) सावन-भादो

ग) जेठ-आषाढ़

घ) आषाढ़-पौष

(iii) इंदर सेना किसकी जय बोलती थी?

क) संरक्षक की

ख) गाँव वालों की

ग) गंगा मैया की

घ) माता-पिता की

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): और फिर मंडली के साथ वे आगे बढ़ जाते थे।
कारण (R): ये लोग हर मकान के सामने रुक कर पानी मांगते थे।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ग) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. हर घर से लोग इंदर सेना पर पानी डालते थे।

ii. ये लड़के कीचड़ में लथपथ रहते थे।

iii. ये घर-घर जाकर पानी माँगते थे।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) सभी विकल्प सही हैं

ख) ii और iii

ग) विकल्प ii

घ) i और ii

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- [10]

(i) किशन दा के मानस पुत्र कौन हैं?

क) इनमें से कोई नहीं

ख) जनार्दन जोशी

ग) भगवान दास

घ) यशोधर पंत

(ii) यशोधर बाबू घर जल्दी क्यों नहीं लौटते थे?

क) क्योंकि उनके बच्चे उनसे खुश नहीं थे।

ख) क्योंकि वहाँ उनका मन नहीं लगता था।

ग) क्योंकि उनकी पत्नी उन्हें पसंद नहीं करती थी।

घ) क्योंकि पत्नी और बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा था।

(iii) यशोधर बाबु किस एरिया में रहते थे? |**सिल्वर वेडिंग**|

क) लक्ष्मीबाई नगर

ख) पंडारा रोड

ग) पहाड़गंज

घ) गोल मार्केट

(iv) यशोधर बाबू मेस के रसोइये क्यों बने थे?

क) क्योंकि वे नौकरी करना नहीं चाहते थे।

ख) क्योंकि वे रसोइया ही बनना चाहते थे।

ग) क्योंकि उनके लायक कोई नौकरी उपलब्ध नहीं थी।

घ) क्योंकि सरकारी नौकरी के लिए उनकी उम्र कम थी।

(v) **जूझ** पाठ के आधार पर लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था?

क) वसंत

ख) मंत्री

ग) सौंदलगेकर　　घ) रतनाप्पा

(vi) जूझ पाठ के अनुसार लेखक तुकबंदी कब करता था?

क) स्कूल में　　ख) खाने के वक्त

ग) सोते वक्त　　घ) भैंस चराने के वक्त

(vii) **जूझ** पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

क) अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है　　ख) अकेलापन डरावना है

ग) अकेलापन उपयोगी है　　घ) अकेलापन अनावश्यक है

(viii) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?

क) पंजाब　　ख) हरियाणा

ग) राजस्थान　　घ) उत्तर प्रदेश

(ix) सिंधु घाटी सभ्यता में कौन-से फल उगाए जाते थे?

क) खजूर और अमरूद　　ख) संतरे और केले

ग) सेब और संतरे　　घ) खजूर और अंगूर

(x) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है?

क) 4 किलोमीटर　　ख) 6 किलोमीटर

ग) 5 किलोमीटर　　घ) 10 किलोमीटर

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये: **[6]**

(i) **वनों का महत्त्व** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(ii) **आतंकवाद के बढ़ते चरण** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iii) **भारतीय समाज में अंधविश्वास** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(iv) **छोटे परिवार के सुख-दुख** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) नाटक की शिल्प संरचना पर प्रकाश डालिए।

(ii) भाषा के प्रवाह को जाँचने का क्या तरीका है ?

(iii) किन-किन विषयों पर विशेष लेखन किया जा सकता है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: [8]

(i) **मोर्चे पर सैनिकों के साथ एक दिन** पर एक फीचर लिखिए।

(ii) टूटते-बिखरते रिश्ते विषय पर एक आलेख लिखिए।

(iii) **सजग नागरिक** पर एक फीचर लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: [6]

(i) दिन ढलने पर कवि के पद शिथिल होने और उर में विह्वलता का अनुभव होने के क्या कारण हैं? **एक गीत** के आधार पर लिखिए।

(ii) **बात सीधी थी पर** कविता के अंत में कवि ने बच्चे का जिक्र क्यों किया है? स्पष्ट कीजिए।

(iii) **विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते** पंक्ति में **विप्लव-रव** से क्या तात्पर्य है? **छोटे ही है, शोभा पाते** ऐसा क्यों कहा गया है?

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: [4]

(i) टिप्पणी करें- सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

(ii) शरद ऋतु और भादों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(iii) **छोटा मेरा खेत** कविता में कवि ने **रस के अक्षय पात्र** से रचनाकर्म की किन विशेषताओं का संकेत किया है? स्पष्ट कीजिए।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: [6]

(i) भक्तिन को दुर्भाग्यवान क्यों कहा गया है?

(ii) **बाज़ार-दर्शन** पाठ के आधार पर मूक आमंत्रण से किस प्रकार की चाह जगती है? उस चाह में आदमी क्या महसूस करने लगता है?

(iii) लुट्टन सिंह जिस गाँव में रहता था, उस गाँव की स्थिति का वर्णन कीजिए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: [4]

(i) आप बाज़ार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य बाज़ार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? **पर्चेज़िंग पावर** आपको किस तरह के बाज़ार में नज़र आती है?

(ii) **कोमल** और **कठोर** दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए। शिरीष के फूल पाठ के आधार बताइए।

(iii) लेखक **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** के आधार पर आधुनिक समाज में कौन-सी समस्या सामने आ खड़ी हुई है?

SOLUTION

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्रवितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो-माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेनेवाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्रायः अभावे दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

(i) (i) सत्पथ पर
(ii) (ii) पर
(iii) (ii) नौकरी की तलाश में
(iv) (i) शिक्षा के सोपान
(v) (i) जब वह विद्यावान होता है
(vi) (i) जीवन निर्वाह
(vii) (iv) इनमें से कोई नहीं

(viii)(iv) भावनाओं को चेतन करना
(ix)(i) परावलम्बी
(x) (iv) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(घ)** सन् 1556 में
व्याख्याः भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में गोवा में खुला, जिनका श्रेय पुर्तगालियो को जाता हे।

(ii) **(क)** प्रभासाक्षी
व्याख्याः प्रभासाक्षी नाम का अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। इसका प्रिन्ट रूप नहीं आता है।

(iii)**(क)** टेलीविजन एवं इंटरनेट
व्याख्याः टेलीविजन एवं इंटरनेट लोकप्रिय माध्यम वर्तमान समय में उपलब्ध है।

(iv)**(ख)** फ़ीचर लेखन
व्याख्याः फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उसका मनोरंजन करना होता है।

(v) **(घ)** आरंभिक
व्याख्याः बीट रिपोर्टिंग पत्रकारिता की आरंभिक अवस्था है।

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

अरे! चाटते जूठे पत्ते जिस दिन देखा मैंने नर को
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाभर को?
यह भी सोचा, क्यों न टेटुआ घोटा जाए स्वयं जगपति का?
जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का।
जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी?
छोड़ आसरा अलखशक्ति का रे नर स्वयं जगपति तू है,
यदि तू जूठे पत्ते चाटे, तो तुझ पर लानत है थू है।
ओ भिखमंगे अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिर दोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग और निद्रा संमोहित,
प्राणों को तड़पाने वाली हुँकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे।
भूखा देख तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जग-जन के
तू तो कह दे, नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे,
तेरी भूख असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल,
तो फिर समयूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर निर्बल।

(i) **(ग)** भूखे लोगों को जूठे पत्तलों में खाना खोजते देखने पर।
व्याख्याः भूखे लोगों को जूठे पत्तलों में खाना खोजते देखने पर।

(ii) **(ख)** क्योंकि जग में समानता नहीं आई।
व्याख्याः क्योंकि जग में समानता नहीं आई।

(iii)**(क)** अनुप्रास अलंकार
व्याख्या: अनुप्रास अलंकार
(iv)**(घ)** भूखों को
व्याख्या: भूखों को
(v) **(ग)** कायर व निर्बल
व्याख्या: कायर व निर्बल

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:
टकराएगा नहीं आज उद्धत लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे पार तक पहुँचाएगा?
अब तक धरती अचल रही पैरों के नीचे,
फूलों की दे ओट सुरभि के घेरे खींचे,
पर पहुँचेगा पथी दूसरे तट पर उस दिन,
जब चरणों के नीचे सागर लहराएगा।
गर्त शिखर बन, उठे लिए भंवरों का मेला,
हुए पिघल ज्योतिष्क तिमिर की निश्छल बेला,
तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।
धूल पोंछ काँटे मत गिन छाले मत सहला,
मत ठंडे संकल्प आंसुओं से तू बहला,
तुझसे हो यदि अग्नि-स्नात यह प्रलय महोत्सव,
तभी मरण का स्वस्ति-गान जीवन गाएगा।
टकराएगा नहीं आज उन्मद लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे दिवस तक पहुँचाएगा?
(i) **(घ)** हर हाल में कार्य करने की प्रेरणा।
व्याख्या: हर हाल में कार्य करने की प्रेरणा।
(ii) **(घ)** विकल्प (iii)
व्याख्या: जीवन संसाधनों के लिए यथार्थ में रहकर प्रयत्न करना होगा।
(iii)**(ख)** विकल्प (i)
व्याख्या: यदि तुम जीवन की कष्टतम परिस्थिति झेल लोगे तो जीवन तुम्हारे बलिदान की प्रशंसा करेगा।
(iv)**(क)** विकल्प (iii)
व्याख्या: अपने हाल की परवाह न करते हुए सकारात्मक भाव से कार्य करते रहना।
(v) **(क)** विकल्प (iii)
व्याख्या: वे उसे लक्क्य प्राप्ति के मार्ग से विचलित कर सकते हैं।

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयऊ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनी मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।
सुत बि नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जिएँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोहि। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।

(i) **(घ)** कोमलता का
व्याख्या: कोमलता का

(ii) **(घ)** जंगल में सीता-हरण, युद्ध, शक्ति
व्याख्या: जंगल में सीता-हरण, युद्ध, शक्ति

(iii) **(ख)** भ्राता को खो देना
व्याख्या: भ्राता को खो देना

(iv) **(क)** निरर्थक
व्याख्या: निरर्थक

(v) **(घ)** पिता के वचन का पालन न करते
व्याख्या: पिता के वचन का पालन न करते

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

उछलते-कूदते, एक-दूसरे को धकियाते ये लोग गली में किसी दुमहले मकान के सामने रुक जाते, "पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।" और जिन घरों में आखिर जेठ या शुरू आषाढ़ के उन सूखे दिनों में पानी की कमी भी होती थी, जिन घरों के कुएँ भी सूखे होते थे, उन घरों से भी सहेजकर रखे हुए पानी में से बाल्टी या घड़े भर-भर कर इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते थे, पानी फेंकने से पैदा हुए कीचड़ में लथपथ हो जाते थे। हाथ, पाँव, बदन, मुँह, पेट सब पर गंदा कीचड़ मलकर फिर हाँक लगाते हैं "बोल गंगा मैया की जय" और फिर मंडली बाँधकर उछलते-कूदते अगले घर की ओर चल पड़ते बादलों को टेरते, "काले मेघा पानी दे।" (धर्मवीर भारती)

(i) **(घ)** इंदर सेना
व्याख्या: इंदर सेना

(ii) **(ग)** जेठ-आषाढ़
व्याख्या: जेठ-आषाढ़

(iii) **(ग)** गंगा मैया की
व्याख्या: गंगा मैया की

(iv) **(घ)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
व्याख्या: कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) **(क)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(घ)** यशोधर पंत
व्याख्या: यशोधर पंत

(ii) **(घ)** क्योंकि पत्नी और बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा था।

व्याख्या: यशोधर बाबू आधुनिक होना चाहते थे पर अपने संस्कारों को भुलाकर नहीं। इस कारण उनका अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सामंजस्य नहीं बैठ पाया। बात-बात पर पत्नी और बच्चों से उनका मतभेद होने लगा इसलिए वे घर जल्दी नहीं आते थे।

(iii) **(घ)** गोल मार्केट

व्याख्या: यशोधर पंत गोल मार्केट एरिया में सरकारी आवास में रहते थे, जो सरकार की तरफ से उनको मिला था। उनके साथ उनकी पत्नी, बड़ा बेटा और बेटी रहा करते थे।

(iv) **(घ)** क्योंकि सरकारी नौकरी के लिए उनकी उम्र कम थी।

व्याख्या: सरकारी नौकरी के लिए यशोधर बाबू की उम्र कम थी। किशनदा ने उनकी सहायता करने के लिए उन्हें मेस का रसोइया बना दिया और 50 रुपये कपडे बनवाने और गाँव भेजने के लिए दिए।

(v) **(ख)** मंत्री

व्याख्या: मंत्री

(vi) **(घ)** भैंस चराने के वक्त

व्याख्या: लेखक अक्सर भैंस को चराने के वक्त तुकबंदी किया करता था। वो अनेक चीजों को देखकर उनपर तुकबंदी किया करता था और उस कविता को कहीं पर भी लिखकर उसे कंठस्थ कर लेता था।

(vii) **(ग)** अकेलापन उपयोगी है

व्याख्या: अकेलापन उपयोगी है

(viii) **(ग)** राजस्थान

व्याख्या: मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को राजस्थान का ख्याल आया।

(ix) **(घ)** खजूर और अंगूर

व्याख्या: सिंधु घाटी सभ्यता में खजूर और अंगूर के फल उगाए जाते थे।

(x) **(ग)** 5 किलोमीटर

व्याख्या: मुअनजो-दड़ो से सिंधु नदी 5 किलोमीटर दूर बहती है।

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:

(i) **वनों का महत्त्व**

वन हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं, किंतु सामान्य व्यक्ति इनके महत्व को समझ नहीं पाते। दैनिक जीवन में वनों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वृक्षों के अभाव में पर्यावरण शुष्क हो जाता है और प्रकृति का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। वन हमारे वातावरण को संतुलित करते हैं, और हमें विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से बचाते हैं।

वनों से हमें विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ; जैसे- इमारती लकड़ी, जलाने की लकड़ी, दवाई में प्रयोग होने वाली लकड़ी आदि प्राप्त होती हैं।

वृक्षों की लकड़ियाँ व्यापारिक दृष्टि से भी उपयोगी होती हैं। इनमें सागौन, देवदार, चीड़, शीशम, चंदन, आबनूस इत्यादि प्रमुख हैं। वनों से लकड़ी के अतिरिक्त अनेक उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति भी होती है, जिनका अनेक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है; जैसे-फर्नीचर उद्योग, औषधि उद्योग इत्यादि। वनों से हमें विभिन्न प्रकार के फल प्राप्त होते हैं, जो हमारा पोषण करते हैं।

वनों से हमें अनेक जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती है। वनों में अनेक पशु-पक्षी होते हैं; जैसे-हिरण, नीलगाय, भालू, शेर, चीता, बारहसिंगा आदि। ये पशु वनों में स्वतंत्र विचरण करते है, भोजन और संरक्षण पाते हैं। वन गाय, भैस, बकरी, भेड़ आदि पालतू पशुओं के लिए विशाल चरागाह प्रदान करते हैं।

भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर रहती है और वर्षा मानसून पर निर्भर है। वन मानसून को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और वर्षा से वन बढ़ते हैं।

वन वायु को शुद्ध करते है क्योकि वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करके ऑक्सीजन छोड़ते है, जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। वनों से वातावरण का तापक्रम, नमी और वायु प्रवाह नियमित होता है, जिससे जलवायु में संतुलन बना रहता है।

वनों के कारण वर्षा का जल मंद गति से बहता है, जिससे भूमि कटाव की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। साथ ही, पेड़-पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को सँभाले रहती हैं, जिससे भूमि कटाव नहीं होता। इससे भूमि ऊबड़-खाबड़ नहीं हो पाती और भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

वनों का हमारे जीवन में योगदान स्पष्ट है। वन हमारे जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत उपयोगी हैं इसलिए वनों का संरक्षण और संवर्द्धन बहुत आवश्यक है और इनके नष्ट का खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा। आजकल हम वातावरण और जलवायु में निरंतर परिवर्तन देख रहे हैं, ये सब वनों के नष्ट होने के कारण ही हैं और अगर इस पर जल्द नियंत्रण न किया जाए तो आने वाले समय की स्थिति और भयावह हो जाएगी।

(ii) **आतंकवाद के बढ़ते चरण**

'मानवतावाद' और 'आतंकवाद' सर्वथा दो विरोधी अवधारणाएँ हैं। मानवतावाद के मूल में 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'विश्व-बंधुत्व' की भावना है। यह 'संपूर्ण विश्व एक परिवार है' का संदेश देता है। इसके मूल में सह-अस्तित्व की भावना है जबकि आतंकवाद अलगाववाद पर आधारित है। आतंकवाद में मानवीय संवेदनाओं का स्थान नहीं होता। पिछले कुछ दशकों से जिस समस्या ने विश्व को सबसे अधिक आक्रांत किया है, वह है-विश्वव्यापी आतंकवाद।

आतंकवाद वह प्रवृत्ति है, जिसमें कुछ लोग अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए हिंसात्मक और अमानवीय साधनों का प्रयोग करते हैं।इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी कार्य जो हिंसक और मानवता के विपक्ष में हो,वे सब आतंकवाद के श्रेणी में आते हैं।

सामान्यतः संसार के सभी देश इसके विरुद्ध संगठित हो रहे हैं। आतंकवाद मानव-जाति के लिए कलंक है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि इसका समूल नाश किया जाए। कोई भी देश इस प्रकार के आतंकवादी संगठनों को प्रश्रय न दे और न किसी प्रकार उनकी सहायता करे। आतंकवाद जैसी समस्या का समाधान बौद्धिक और सैनिक दोनों स्तरों पर किया जाना चाहिए। विश्व की सभी सरकारों को अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के विरुद्ध परस्पर सहयोग करना चाहिए ताकि कोई भी आतंकवादी गुट कहीं शरण या प्रशिक्षण न पा सके। आतंकवाद के समाप्त होने पर ही मानवता का स्वप्न पूरा हो सकेगा।कई बार आतंकवाद की शुरुआत हमारी गलती से ही होती है।इसके पूर्ण समाधान के लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को और सशक्त बनाने की जरूरत है।

(iii) **भारतीय समाज में अंधविश्वास**

जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मानव ने नियमों की संकल्पना की जिन्हें 'धर्म' की संज्ञा दी गई। इन नियमों का उद्देश्य मानवजीवन को सुखी, संपन्न व व्यवस्थित बनाना था। समय बदलने के साथ-साथ कुछ नियम अप्रासंगिक हो गए और वे अंधविश्वास का रूप धारण करने लगे। आधुनिक युग में ये अंधविश्वास प्रगति में बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

भारतीय समाज के अनेक विश्वास जीवन की गतिशीलता के साथ न चलने के कारण पंगु हो

गए हैं। इन अंधविश्वासों में धर्म की रूढिबद्धता, आभूषण-प्रेम, जादू-टोने में विश्वास, देवी-देवताओं के प्रति अबौद्धक श्रद्धा आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं। ये कुरीतियाँ आज देश की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रही हैं। उदाहरणस्वरूप हमारे धर्म में कर्म के अनुसार जाति-प्रथा का विधान किया गया, परंतु बाद में उसे जन्म के आधार पर मान लिया गया। आज उसकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है, परंतु आरक्षण, जातिगत श्रेष्ठता के भाव संघर्ष का कारण बने हुए हैं। इसी तरह मुसलमानों के आगमन से देश में छुआछूत की भावना को बढ़ावा मिला। युद्धों में गिरफ्तार लोगों को मुसलमानों के हाथ का खाना पड़ता था, फलत: हिंदू समाज उन्हें बहिष्कृत कर देता था या उन्हें अस्पृश्य मान लिया जाता था। उनके साथ भोजन करना, उठना-बैठना आदि तक निषेध कर दिया गया। इससे समाज खोखला हुआ। इसी प्रकार भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग जादू-टोने में विश्वास रखता है। हालाँकि मीडिया के प्रसार व बौद्धिकता बढ़ने से जादू-टोने का जाल कम होने लगा है। फिर भी यदा-कदा नरबलि, सती–प्रथा आदि की घटनाएँ प्रकाश में आती ही रहती हैं। इसके अतिरिक्त समाज में अनेक तरह के अपशकुन अब भी प्रचलित हैं, जैसे बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना, कोई काम शुरू करते समय किसी को छींक आना, पीछे से आवाज देना, चलते हुए अँधेरा होना आदि। कई लोग इनके कारण अपने महत्वपूर्ण काम तक रोक देते हैं। हमारे समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास समग्र रूप में परंपराओं के प्रति अंधभक्ति है। आज भी हम अनेक अव्यावहारिक बातों से जुड़े हुए हैं। फलित ज्योतिष विद्या के नकली धनी इस प्रकार के विश्वास की आड़ में अपना पेट भरते हैं। लड़की के जन्म को अशुभ मानना, विवाह में सामर्थ्य से अधिक व्यय आदि भी इन्हीं अंधविश्वासों की उपज है। अब तो धर्मगुरुओं की एक ऐसी जमात' तैयार हो चुकी है जो आस्था के नाम पर जनता को भ्रमित कर रहे हैं। मीडिया भी इसमें पूरे मनोयोग से सहयोग कर रही है।जब अंधविश्वासों के माध्यम से भ्रमित होने से बचाने वाले ही जनता को भ्रमित करने में सहायक हों तब किया भी क्या जा सकता है? आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक रूप को समझकर आचरण करें और अपनी प्रगति करें और जो भी धर्म आपके प्रगति में रुकावट लाए, वो कोई धर्म नहीं हो सकता। समाज को चाहिए कि नए जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चले और अंध परंपराओं को सदा के लिए दफ़न कर दे।

(iv) **छोटे परिवार के सुख-दुख**

मानव सभ्यता के विकास के साथ जीवन-यापन में कठिनाई आती जा रही है। आज जीवन-यापन के साधन अत्यंत महँगे होते जा रहे हैं। इस कारण परिवारों का निर्वाह मुश्किल से हो रहा है। इस समस्या का मूल खोजने पर पता चलता है कि जनसंख्या-वृद्धि के अनुपात में जीवनोपयोगी वस्तुओं एवं साधनों में वृद्धि नहीं हुई है। अतः हर देश में परिवारों को छोटा रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। किंतु छोटे परिवार के साथ सुख-दुख दोनों जुड़े हैं। हालाँकि छोटे परिवार के सुखी होने के पीछे अनेक तर्क दिए जाते हैं।

सर्वप्रथम, छोटे परिवार में सुखदायक संसाधन आसानी से उपलब्ध कराए जा सकते हैं। यदि कोई कठिनाई आती है तो उसका निराकरण अधिक कठिन भी नहीं होता। बड़े परिवार के लिए स्थितियाँ अत्यंत विकट हो जाती है। आधुनिक समय में रोजगार, मकान आदि की व्यवस्था बेहद महँगी होती जा रही है। इन्हीं सब कारणों से छोटा परिवार सुखी माना जाता है।इनके अलावा अन्य कई तरह के फायदे हैं एक छोटे परिवार से।

वहीं दूसरी तरफ छोटे परिवार में अनेक प्रकार की खामियाँ भी है । छोटे परिवार में सुविधाएँ होती हैं, परंतु अपनापन नहीं होता। छोटे परिवार का व्यक्ति सामाजिक नहीं हो पाता। वह

अहं भाव से पीड़ित होता है। इसके अलावा, बीमारी या संकट के समय जहाँ बड़े परिवार की जरूरत होती है, छोटा परिवार कभी खरा नहीं उतरता।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) नाटक के अंतर्गत सर्वप्रथम कहानी के रूप को किसी शिल्प फार्म अथवा संरचना के भीतर पिरोना होता है। इसके लिए नाटक के शिल्प की जानकारी होनी आवश्यक होती है। यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि नाटक का मंचन मंच पर होता है। इसी कारण एक नाटककार को रचनाकार होने के साथ-साथ कुशल संपादक भी होना चाहिए। घटनाओं, स्थितियों, दृश्यों का चयन, मंचन का क्रम आदि रखने का अनुभव और जानकारी होनी अत्यंत आवश्यक है, तभी नाटक सफल हो पाता है।

(ii) रेडियो और टी वी के समाचारों में भाषा एक महत्वपूर्ण तत्व है । इनके भाषा में प्रवाह होना जरूरी है । भाषा के प्रवाह को जाँचने का तरीका है कि हम समाचार को लिखने के बाद उसे बोल-बोलकर पढ़ें । समाचार को पढ़ने से यह पता चल जाएगा कि भाषा में कितना प्रवाह है और एंकर को पढ़ते समय कोई परेशानी तो नहीं होगी ।

(iii) विशेष लेखन के अंतर्गत केवल रिपोर्टिंग ही नहीं अति है बल्कि संबंधित विषय पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा, स्तम्भ लेखन भी आता है। इन विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त करने के संवाददाता का विषय विशेषज्ञ होना परम आवश्यक है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **मोर्चे पर सैनिकों के साथ एक दिन**

सीमा पर तैनात सैनिक मोर्चे पर पूरी सख्ती से तैनात रहते हैं।मोर्चे पर सैनिकों के साथ एक दिन कर्नल एस.पी. खुराना ने भारत-पाक सीमा पर आतंकवादियों से लड़ते हुए अपनी जान दे दी। एस.पी. खुराना की ही भाँति अन्य कई सैनिकों ने भी अपनी जान दे दी, किंतु मीडिया पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि मीडिया ने इस पर कोई विशेष ध्यान न देते हुए ख़बर नहीं बनाई।मीडिया के अलावा आम भारतीयों को भी इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं रही। ऐसा लगता है कि सैनिक जान देने के लिए ही सेना में जाता है। इस समाचार को सुनते ही मेरे मन में यह विचार आया कि मैं भी उस पवित्र स्थल को देखूँ जहाँ कर्नल खुराना ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। वहाँ के दुर्गम पहाड़ो पर सैनिकों को अपने कर्तव्यों का पालन करते देख मैं अचंभित रह गया कि किस प्रकार कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हमारे सैनिक अपने प्राणों की चिंता किए बिना हमारे प्राणों की एवं अपने देश की रक्षा करने के लिए सदैव डटे रहते है। मैंने मन में उन्हे शत्-शत् बार नमन किया। हमारे देश के सैनिक कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी सीमा पर तैनात होकर मोर्चा संभालते हैं, उनके लिए सारी परिस्थितियाँ समान होती हैं।हम सब को उन पर गर्व होना चाहिए।

(ii) **टूटते-बिखरते रिश्ते**

वर्तमान में संयुक्त परिवार की परंपरा टूट रही है और एकल परिवारों का प्रचलन हो गया है। 'एक मै और एक तुम' बस, इसी दायरे में सिमट कर रह गया है, आज का जीवन। 'मैं' का तो सबको पता है, परंतु 'एक तुम' की परिभाषा बदलती रहती है। यह बात बच्चा कभी अपनी माँ को कहता है, कभी जिगरी दोस्त, कभी प्रेयसी, कभी पत्नी को। विवाह-सूत्र में बँधते ही पति-पत्नी सिर्फ अपने लिए ही रह जाते हैं, अपने सपनों के संसार मे खो जाते हैं। उनके जीवन में घर के बुजुर्ग या माता-पिता का कोई स्थान नहीं रहता है, ये लोग बेगाने हो जाते हैं। इस आधार पर यह कहना तनिक भी गलत नहीं होगा कि आजकल रिश्तों के मायने पूरी

तरह से बदल गए हैं। पहले के जमाने में रिश्तों को एक साथ जोड़ कर रखा जाता था, परंतु आज की स्थिति ये है कि रिश्ते टूटते जा रहे हैं।

यह विडंबना ही है कि आज एकल परिवार इतने छोटे और तंगदिल हो गए हैं कि उनमें माँ-बाप और बड़े-बुजुर्ग बाहरी व्यक्ति हो गए हैं। वे घर के केंद्र में नहीं, हाशिए पर खड़े हैं। भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ़ की दावत' में माँ को मेहमानों के सामने पड़ने से बचाने के लिए स्टोर रूम में बंद करने से लेकर घर के बाहर भेजने के प्रबंध सोचे जाते हैं। पुत्र डरता है कि कहीं उसका बॉस उसकी बूढ़ी माँ को देखकर उसे असभ्य और गँवार न समझ बैठे। बाहर के सौ व्यक्ति घर में दावत खाते हैं, मगर बूढ़ी माँ के लिए निरामिष भोजन की व्यवस्था नहीं, वह भूखी खुद का अस्तित्व बचाने को बाध्य है। एकल परिवारों की महत्त्वाकांक्षाएँ बढ़ी-चढ़ी होती हैं। सब अपनी चिंताओं-योजनाओं में खोए रहते हैं।जहाँ सब को केवल अपनी फ़िक्र हो, ऐसे में बुजुर्गों की आवश्यकताओं की सुध कौन ले? बड़े लोगों की हालत दिनों-दिन नौकर-नौकरानियों से भी बदतर हो जाती है। न कोई उनका हालचाल पूछता है, न दवा-दारू और न खाना-कपड़ा आदि ही ढंग से उपलब्ध होता है। अधिकांश बुजुर्ग मन-ही-मन घुटते रहते हैं। उनका अपना रचा हुआ प्यारा संसार ही उनके लिए कारावास बन जाता है।

(iii) **सजग नागरिक**

सजग नागरिक का तात्पर्य एक जागरूक नागरिक से है। जागरूक अर्थात् अपने परिवेश में घटित होने वाली सभी घटनाओं से न सिर्फ वह अच्छी तरह परिचित रहे, बल्कि उन परिस्थितियों में अपने दायित्व के प्रति भी अत्यंत संवेदनशील और जागरूक रहे। देश, समाज, समुदाय, समूह, परिवार आदि के बारे में सभी जानकारियों को रखना तथा उनके प्रति अपने दायित्वों को निभाना ही एक सामान्य नागरिक को सजग नागरिक बनाता है। सजगता का मतलब है, सदैव अलर्ट रहना। सजग व्यक्ति ही अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

अपने लक्ष्य को लेकर सजग रहने वाला व्यक्ति पूरी चैतन्यता के साथ उससे जुड़ जाता है। उसकी समस्त मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा अपने लक्ष्य को पाने में लग जाती है।अपनी सजगता के कारण ही वो व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है और अपने कामों को अच्छे से कर पाता है।

एक सजग नागरिक हमेशा अपने दायित्वों के प्रति सचेत रहता है। वह चिंतनशील एवं कर्मशील होता है। मनुष्य का सोचना एवं उसके अनुसार व्यवहार करना गतिशील जीवन की पहचान है। एक सजग नागरिक न केवल देश एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का ईमानदारीपूर्वक निर्वाह करता है, बल्कि वह समाज के सभी सदस्यों की बेहतरी के लिए भी चिंतित रहता है। उसकी सजगता स्वयं के साथ-साथ अपने पूरे समाज को बेहतर दिशा की ओर ले जाने के लिए होती है।

सजगता एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसे मनुष्य अपने अंदर विकसित करता है। यह कोई जन्मजात विशेषता नहीं होती, बल्कि स्वयं का समाजीकरण करते हुए अर्जित की जाती है। सजगता वह मार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को एक नया अर्थ प्रदान करता है। यह मनुष्य की बेहतर पहचान निर्मित करता है।

कोई भी समाज अपने सजग नागरिकों के बल पर ही आगे बढ़ता है एवं विकास करता है। किसी विशेष परिस्थिति में भी अपनी जिम्मेदारियों को उचित ढंग से समझने वाला और उन जिम्मेदारियों को निभाने वाला नागरिक ही एक सजग नागरिक है। प्रत्येक समाज अपने

विकास के लिए ऐसे ही नागरिकों की इच्छा रखता है।हर समाज में व्यक्तियों का सजग होना नितांत आवश्यक है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **दिन ढलते ही कवि हृदय में व्याकुलता और चाल में शिथिलता का अनुभव करने लगता है इसके निम्न कारण हो सकते हैं-**

i. प्रकृति और सांसारिक नियमों के अनुसार प्रत्येक प्राणी दिन ढलते ही अपने घर की ओर लौटता है क्योंकि वहाँ कोई न कोई उनकी प्रतीक्षा करता रहता है जबकि कवि के पास ऐसा कोई कारण नहीं है।

ii. कवि निराश और उदास है इसलिए उसे घर लौटने का कोई उत्साह नहीं है।

iii. कवि अपने मन की व्यथा को किसी के साथ बाँटना नहीं चाहता है इसलिए उसे घर लौटने की कोई जल्दी नहीं है।

(ii) बात ने कवि को परेशान स्थिति में पसीना पोंछते देखकर पूछा कि "क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना नहीं सीखा?" इसका तात्पर्य यह है कि जब सीधी-सरल भाषा में बात को सुविधाजनक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, तो अनावश्यक आडंबरपूर्ण बोझिल भाषा के घुमाव के कारण परेशानी झेलने से क्या लाभ? "बात को सहजता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए"- इस संदेश को सामने लाने के लिए ही कवि ने बच्चे का जिक्र किया है।

(iii)'विप्लव-रव' से कवि का तात्पर्य क्रांति से है। कवि के अनुसार जब क्रांति होती है, तो गरीब लोगों में या आम जनता में जोश भर जाता है। यह वही वर्ग है, जो शोषण का शिकार होते हैं। अतः क्रांति का आह्वान हमेशा शोषित वर्ग द्वारा होता है। जब समाज में क्रांति होती है, तो इन्हीं से आरंभ होती है। यही क्रांति के जनक होते हैं। क्रांति का आगाज़ होते ही नए और सुनहरे भविष्य के सपने संजोने लगते हैं। यह प्रसन्नता इनके चेहरे में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। कहा गया है कि यही वर्ग क्रांति के समय शोभा पाता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) रक्षाबंधन भाई-बहन के मधुर प्रेम का बंधन है। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से होता है। भाई-बहन के मन में मधुर प्यार की भावनाएँ होती हैं।

(ii) भादों के महीने में काले-काले बादल उमड़ते-घुमड़ते हैं, तेज बारिश होती है। बादलों के कारण अँधेरा-सा छाया रहता है। इस मौसम में जीवन रूक-सा जाता है। इसके विपरीत, शरद ऋतु में प्रकाश बढ़ जाता है। मौसम साफ होता है तथा धूप चमकीली होती है। चारों तरफ उमंग का माहौल होता है।

(iii)कविता 'छोटा मेरा खेत में ' रस के अक्षय पात्र के रूप में कवि की अभिव्यक्ति अर्थात उसके काव्य रचना की ओर संकेत किया गया है । जिस प्रकार अक्षयपात्र में निहित सामग्री कभी समाप्त नहीं होती और पात्र सर्वदा सभी को संतुष्टि प्रदान करता है उसी प्रकार कवि की कविता का रस एवं भाव सौन्दर्य अनंतकाल तक अपने पाठकों और श्रोताओं को आनंद देता रहता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) भक्तिन के जीवन में शुरू से ही दुःखों ने डेरा डाला हुआ था। मायके में उसे विमाता (सौतेली माँ) ने विपरीत परिस्थितियों में डाले रखा। विवाह के बाद उसने तीन बेटियों को जन्म दिया,

जिसके कारण ससुराल में सास तथा जिठानियाँ उसके साथ बुरा व्यवहार करती थीं। 36 वर्ष की आयु में पति का भी देहांत हो गया, जिसके कारण ससुराल वालों ने उससे धन-संपत्ति छीनने की कोशिश की, पर वह संघर्ष करती रही। बड़े दामाद को उसने घरजमाई बनाया था, परंतु वह भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस प्रकार उसका संपूर्ण जीवन दुःखों से ही घिरा रहा।

(ii) मूक आमंत्रण से बाज़ार अपने आकर्षण से ग्राहकों को अपनी ओर खींचता है। इससे से व्यक्ति को लगता है कि उसके पास जो भी वस्तुएँ हैं, वे उसकी आवश्यकता के अनुसार कम हैं। अतः वह और वस्तुएँ खरीदने का विचार है। वह महसूस करने लगता है कि उसे बाज़ार जाकर और सामान खरीदना चाहिए। अतः इसलिएसे वह और अधिक वस्तुओं की कामना करने लगता है।

(iii) लुट्टन सिंह का गाँव किसी अमीर गाँव की श्रेणी में नहीं आता था। वहाँ सभी लोग पुराने और बाँस-फूस की झोंपड़ियों में रहते थे। किसी भी गाँववासी के पास पक्का घर नहीं था। सभी मिल-जुलकर दिनभर या तो खेत में काम करते थे या इधर-उधर मज़ूरी करके अपना जीवन-यापन किया करते थे। इसका सबसे अच्छा प्रमाण इस बात से मिलता है कि वे सब मिलकर राज पहलवान लुट्टन सिंह और उनके बेटों को दैनिक भोजन भी नहीं दे पाए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i)
- **मॉल की संस्कृति** – मॉल की संस्कृति में हमें एक ही छत के नीचे तरह-तरह के सामान मिलते हैं यहाँ का आकर्षण ग्राहकों को सामान खरीदने को मजबूर कर देता है। इस प्रकार के बाजारों के ग्राहक उच्च और उच्चतम वर्ग से संबंधित होते हैं।
- **सामान्य बाज़ार** – सामान्य बाज़ार में लोगों की आवश्यकतानुसार चीजें होती हैं। यहाँ का आकर्षण मॉल संस्कृति की तरह नहीं होता है। इस प्रकार के बाजारों के ग्राहक मध्यम वर्ग से संबंधित होते हैं।
- **हाट की संस्कृति** – हाट की संस्कृति के बाज़ार एकदम सीधे और सरल होते हैं इस प्रकार के बाजारों में निम्न और ग्रामीण परिवेश के ग्राहक होते हैं। इस प्रकार के बाजारों में दिखावा नहीं होता है।
- पर्चेजिग पावर हमें मॉल संस्कृति में ही दिखाई देता है क्योंकि एक तो उसके ग्राहक उच्च वर्ग से संबंधित होते हैं और मॉल संस्कृति में वस्तुओं को कुछ इस तरह के आकर्षण में पेश किया जाता है कि ग्राहक उसे खरीदने को मजबूर हो जाते हैं।

(ii) गांधी जी ने जन सामान्य की पीड़ा से द्रवित होकर देश को आजाद करने का बीड़ा उठाया जो उनके कोमल स्वभाव का परिचायक था वहीं अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ़ वे वज्र की भांति तनकर खड़े हो जाते थे जो उनकी कठोरता का प्रतीक था। एक ओर गांधी जी के मन में सत्य, अहिंसा जैसे कोमल भाव थे तो दूसरी ओर अनुशासन के मामले में वे बड़े ही कठोर थे। तत्कालीन वाह्य परिस्थितियों से अक्षुण्ण रहकर सत्य एवं अहिंसा के रास्ते पर चलते रहे। अत: हम कह सकते हैं कि कोमल और कठोर दोनों भाव गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

(iii) लेखक **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** के आधार पर आज के आधुनिक समाज में गरीबी और उत्पीड़न की घोर समस्या होते हुए भी इतनी बड़ी समस्या नहीं है, जितनी बड़ी समस्या यह है कि बहुत से लोग अपने निर्धारित काम को अरुचि के साथ विवशतापूर्वक करते हैं। यह प्रवृत्ति चालू काम करने एवं काम न करने को प्रेरित करती है।